तर्ज--बहारों फूल बरसाओ

सजा दो बाग तिलसम का मेरी रूहो ने आना है

1--न रहे कोई कसर बाकी शानो और ग़ुमानो में
खुशबू ऐसी बिखराओ हो काबिल मन लुभाने में
बेहोशी ऐसी छा जाए भुलाए निज ठिकाना है

2--खिंचावट सबको ऐसी हो बेसुध हो के फंस जाए
जाल माया का ऐसा हो के चक्कर मे उलझ जायें
निकलने की भी सुध ना हो ऐसा परपचं रचाना है

3--मेरी वानी से अनभिज्ञ हो पूजा झूठी में खो जाए
दिखाना कष्ट सब भारी मगर तन से ना छू जाए
उसी उलझन में रह जाएँ ऐसा तिलसम रचाना है

4-संभालूगां यह तन अपने दिखा कर खेल मायाका
सभी इच्छाएं पूरी कर तभी घर ले के जाऊंगा
अखंड दुनिया को करके ही तभी घर लौट जाना है

Nijanand App